Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
Special Issue on Visual Culture, Performing Arts, and Social Media: An Interdisciplinary Analytical Perspective 7(8s)

A CRITICAL ANALYSIS OF WASH PAINTING IN THE CONTEMPORARY ART SCENARIO: WITH SPECIAL REFERENCE TO UTTAR PRADESH

समसामयिक कला परिदृश्य में वॉश चित्रण पद्धति का समीक्षात्मक विश्लेषण: उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में

Sunil Yadav [1], Dr. Kumud Bala [2], Richa Singh [3], Devendra Pal Singh [4]

[1] Assistant Professor, Department of Drawing and Painting, D.A-V. College, CSJM University, Kanpur, India
[2] Associate Professor, Department of Drawing and Painting, D.A-V. College, CSJM University, Kanpur, India
[3] Research Scholar, Department of Drawing and Painting, D.A-V. College, CSJM University, Kanpur, India
[4] Research Scholar, Department of Drawing and Painting, D.G.P.G. College, CSJM University, Kanpur, India

ABSTRACT

English: Evaluating the role of the wash method in modern Indian painting is a testament to how wash painting initiated a cultural rebellion against colonial art education in India and a search for indigenous identity. The history of Indian painting is very old and rich, ranging from the famous murals of Ajanta to the intricacies of Rajasthani, Pahari, and Mughal miniature painting. However, during the British period in India, Indian art declined and Indian artists began to gravitate towards Western realism. It was then that Abanindranath Tagore's innovative approach attempted to revive the spirit of Indian art. He combined the influences of Japanese art, the Ajanta lineage, and Indian themes to create a new approach known as the "Bengal School Wash Method." Through this method, artists began to paint Indian themes with emotionality and presented the Ajanta lines in a modern way. This art reconnected artists with the roots of Indian culture and Indian art, rather than simply imitating foreign oil paint. But some critics considered this technique too imaginative and vague, confined to historical and mythological subjects. It failed to endure in modern complexities and contemporary environments. Despite this, the wash painting method not only transformed the face of Indian art but also planted new seeds of art in centers such as Bengal, Shantiniketan, and Lucknow. It can be said that wash painting witnessed a golden age in the history of painting. It also liberated Indian art from the colonial era and provided a philosophical and spiritual foundation.

Hindi: भारत की आधुनिक चित्रकला में वॉश पद्धति की भूमिका का मूल्यांकन करना इस बात का प्रमाण है कि वॉश चित्रण ने किस प्रकार भारत में औपनिवेशिक कला शिक्षा के विरुद्ध एक सांस्कृतिक विद्रोह एवं स्वदेशी पहचान की खोज की। भारतीय चित्रकला का इतिहास अत्यंत पुराना एवं समृद्ध है, जिसमें अजंता के प्रसिद्ध म्यूरल से लेकर राजस्थानी, पहाड़ी और मुगल लघु चित्रकला की बारीकियां भी शामिल है। परंतु भारत में ब्रिटिश काल के दौरान भारतीय कला का पतन हुआ और भारतीय कलाकार पाश्चात्य यथार्थवाद की तरफ अग्रसर होने लगे, तभी अवनींद्रनाथ टैगोर के नए दृष्टिकोण ने भारतीय कला की आत्मा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उन्होंने जापानी कला के प्रभाव, अजंता की रेखांकन शैली और भारतीय विषयों को लेकर एक नई पद्धति को जन्म दिया, जिसे बंगाल स्कूल की 'वॉश पद्धति' के नाम से जाना जाता हैं। इस पद्धति के माध्यम से कलाकारो ने भावनात्मकता के साथ भारतीय विषयों को लेकर चित्रांकन प्रारंभ किया और अजंता की रेखाओं को आधुनिक रूप से प्रस्तुत किया। इस कला ने कलाकारों को विदेशी तैल रंग की नकल के बजाय भारतीय संस्कृति एवं भारतीय कला की जड़ों से पुन: जोड़ने का प्रयास किया। परंतु कुछ आलोचकों के अनुसार यह तकनीक बहुत अधिक काल्पनिक और धुंधलापन लिए हुए थी, जो कि ऐतिहासिक, पौराणिक कथाओं के साथ ही सीमित विषय तक बंधी रही थी। आधुनिक जटिलताओं और आधुनिक परिवेश में यह ज्यादा समय तक न रह सकी। इसके बावजूद भी वॉश चित्रण पद्धति ने भारतीय कला का स्वरूप ही नहीं बदला बल्कि बंगाल, शांतिनिकेतन और लखनऊ आदि केन्द्रो पर कला की नई पौध भी रोपित की। कहा जा सकता हैं कि वॉश कला चित्रकला के इतिहास

Received 26 February 2026
Accepted 13 April 2026
Published 06 May 2026

Corresponding Author
Sunil Yadav, 232sunil.k@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v7.i8s.2026.7726

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

में स्वर्णिम युग की साक्षी रही, साथ ही इस कला ने भारतीय कला को औपनिवेशिक काल से मुक्त कराकर दार्शनिक और आध्यात्मिक आधार भी प्रदान किया।

Keywords: Wash Method, Indian Painting, Bengal School, Abanindranath Tagore, वॉश पद्धति, भारतीय चित्रकला, बंगाल स्कूल, अवनींद्रनाथ टैगोर

1. प्रस्तावना

भारतीय चित्रकला का इतिहास एक गौरवशाली विरासत समेटे हुए हैं किंतु 19वीं शताब्दी के अंत तक औपनिवेशिक भारत ने अपनी पारंम्परिक एवं गौरवशाली इतिहास को धूमिल होते हुए देखा है। पाश्चात्य यथार्थवाद का भारतीय कला पर एवं यहां के कलाकारों पर गहरा प्रभाव दिखाई देने लगा था जैसे-जैसे भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव बढ़ता गया वैसे-वैसे भारतीय कला पर पश्चिमी प्रभाव भी बढ़ता गया। भारत में अंग्रेजी शासन के फल-स्वरुप कला पर दो विशेष प्रभाव पड़े, एक तो स्थानीय कलाकारों ने अपनी समझ के द्वारा पाश्चात्य कला को अपनाकर अपनी शैली में परिवर्तन किया। दूसरा यह कि समाज के उन सभी वर्गों ने जो कलाओं के संरक्षक समझ जाते थे पश्चिमी कला के प्रति आदर भाव और अपनी कला के प्रति हीन भावना को उत्पन्न किया। अंग्रेजी सत्ता ने इस स्थिति का लाभ उठाते हुए पाश्चात्य कला को प्रोत्साहन दिया और पश्चिमी शैली में काम करने वालों को प्रोत्साहित किया।

19वीं शताब्दी के मध्य तक राजस्थानी, पहाड़ी व मुगल शैलियों में पर्याप्त गिरावट आ चुकी थी। 1880 तक आते-आते इन शैलियों पर पर्याप्त यूरोपीय प्रभाव पड़ चुका था। अनेक विदेशी चित्रकार भी विभिन्न शासको के दरबार में आने लगे थे जिसके कारण भारत की परंपरागत शैलियों को बड़ा आघात लगा। पाश्चात्य तैल रंगों का प्रयोग करके राजा रवि वर्मा जैसे महान कलाकारों का जन्म हुआ। जिन्होंने भारतीय कला को एक नई दिशा प्रदान की। उनके चित्रों में भारतीय विषयों तथा भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण होने के कारण वेशभूषा तथा वातावरण तो भारतीय थीे परंतु चित्रण तकनीक पूर्ण रूप से यूरोपीय थी। परिणाम स्वरूप तैल मध्य में अधिकांश कार्य किए जाने लगे। भारत में आंग्ल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मद्रास(1850), कोलकाता (1854), मुंबई(1857), लाहौर(1875) व लखनऊ(1911) में कला महाविद्यालयों की स्थापना की गई। जहां की शिक्षा का मूल आधार रॉयल अकादमी ऑफ लंदन थी। जिसने भारतीय कलाकारों को पाश्चात्य कला की तरफ आकर्षित किया और विदेशी मध्य व विदेशी सोच कलाकारों पर हावी होने लगी। यह स्थिति बहुत दिनों तक चलती रही। किंतु इसके विरोध में एक नए आंदोलन का प्रारंभ हुआ जिसे बंगाल का पुनरुत्थान आंदोलन कहा गया। यह ऐसे कलाकारों एवं कला प्रेमियों का दल था। जिन्होंने भारतीय परंपरा को जीवित रखते हुए मध्यकालीन लघु शैलियों के साथ-साथ अजंता की सशक्त रेखांकन को अपने चित्रों में प्रयोग किया। यह कलाकार कोमल घुमावदार रेखाओं का प्रयोग करके जल रंग वॉश चित्रण तकनीक का प्रयोग करते थे।

1.1. साहित्य समीक्षा

19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय कला पर बढ़ते पाश्चात्य यथार्थवाद के प्रभाव और पारंपरिक शैलियों के पतन को महसूस किया जाने लगा था। अग्रवाल, डॉ. गिरिराज किशोर(2006) के अनुसार, इस काल में भारतीय कलाकार यूरोपीय तकनीक की ओर आकर्षित हो रहे थे, जिसे अवनींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय आत्मा के साथ पुनर्जीवित किया। शोध पत्र में स्पष्ट किया गया है कि अवनींद्रनाथ टैगोर ने जापानी कलाकारों हिशिदा और तैकान से वॉश तकनीक सीखी और उसमें भारतीय रेखांकन एवं जल रंगों का समन्वय कर एक नई निजी शैली विकसित की।

वर्मा, लक्ष्मीकांत(2000) के अनुसार क्षितिन्द्रनाथ मजूमदा, अवनींद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बसु के शिष्य और असित कुमार हलदार के सहपाठी थे। वे कोलकाता, कला महाविद्यालय से कला की शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट में शिक्षण कार्य करने लगे। उसके बाद इलाहाबाद, विश्वविद्यालय के कुलपति उन्हें इलाहाबाद ले आए। जहां पर उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चित्रकला विभाग की स्थापना में अपनी अहम भूमिका निभाई। भयभीत नामक एक पेंटिंग उनकी इलाहाबाद संग्रहालय में संग्रहित है। यह चित्र दर्शाता है कि वह वॉश चित्रण विद्या के एक हस्त सिद्ध कलाकार थे।

मश्रा,अवधेश(2023) के अनुसार, लखनऊ की वॉश शैली बंगाल से अलग अपनी एक पहचान रखती है, जिसमें वीरेश्वर सेन, बद्रीनाथ आर्य और हरिहर लाल मेढ़ जैसे कलाकारों ने इसे नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। शोध में नंदलाल बोस की सती और शैलेंद्र नाथ डे की मेघदूत श्रृंखला जैसे कालजयी कार्यों का उल्लेख है, जो भारतीय धार्मिक और पौराणिक विषयों की प्रधानता को दर्शाते हैं।

पुनर्जागरण कालीन चित्रकला के प्रचार में जेम्स कजिन्स की भूमिका के विषय में द्विवेदी, डॉ. रामशंकर (2021) ने लिखा है कि उनके प्रयास से भारतीय कला आंदोलन की लहर दक्षिण भारत में ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी फैली। वे 1924 में यूरोप भ्रमण करने लिए गए थे तब अपने साथ 40 नव भारतीय चित्रकारों के चुने हुए चित्रों की प्रतिकृतियों को लेकर गये थे इन चित्रों की बहुत प्रशंसा हुई थी। इसके पश्चात 1927 में कजिन्स अवनींदनाथ टैगोर और उनके शिष्यों के 140 भारतीय पुनर्जागरण कालीन मूल चित्रों को यूरोप प्रदर्शन के लिए ले गए, जिन्हें जिनेवा अर्ट स्कूल के एथेनी स्कूल की गैलरी में प्रदर्शित करने का आयोजन किया गया। इसके बाद 1930 में कजिन्स दुसरी बार अमेरिका भाषण देने के उद्देश्य से गये तब भी भारतीय पुनर्जागरण कालीन चित्रों को प्रदर्शन के उद्देश्य से ले गए थ।े

1.2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारत में औपनिवेशिक कला शिक्षा के प्रतिवाद के रूप में उभरी वॉश चित्रण पद्धति के ऐतिहासिक विकास और सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन करना है। इसके साथ ही, यह शोध बंगाल स्कूल से प्रारंभ होकर लखनऊ (उत्तर प्रदेश) के कला केंद्रों तक इस विधा के विस्तार, तकनीकी परिवर्तनों और समकालीन समय में इसके अस्तित्व के समक्ष खड़ी चुनौतियों का समीक्षात्मक विश्लेषण करने का लक्ष्य रखता है ।

1.3. शोध पद्धति

इस शोध में ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से डेटा एकत्र किया है, जिसमें विभिन्न कला दीर्घाओं के कैटलॉग, मोनोग्राम और मानक संदर्भ ग्रंथों का सहारा लिया गया है। अध्ययन का ढांचा गुणात्मक है, जहाँ वॉश पद्धति के उद्भव से लेकर उसके आधुनिक स्वरूप तक के क्रमिक विकास का विश्लेषण किया गया है। शोध में कला के तुलनात्मक अध्ययन को भी शामिल किया गया है, विशेषकर बंगाल स्कूल और लखनऊ शैली के बीच के तकनीकी और विषयात्मक अंतर को स्पष्ट करने के लिए बद्रीनाथ आर्य और राजेंद्र प्रसाद जैसे कलाकारों के कार्यों का उदाहरण दिया गया है। अंततः, यह पद्धति वर्तमान कला बाजार और शैक्षणिक परिदृश्य के संदर्भ में इस विधा की प्रासंगिकता और संरक्षण की आवश्यकता पर निष्कर्ष प्रस्तुत करती है ।

1.4. अवनींद्रनाथ टैगोर की विशिष्ट भूमिका

अवनींद्रनाथ टैगोर ने वॉश तकनीक को दो जापानी कलाकारों हिशिदा व तैकान से 1902-1903 में सीखा था। जब यह दोनों कलाकार उनके घर कोलकाता आए थे। उन्होंने जापानी वॉश तकनीक में परिवर्तन करके भारतीय कोमल रेखाओं एवं जल रंगों का प्रयोग करके अपनी एक निजी शैली को विकसित किया। अवनींद्रनाथ टैगोर ने इस जापानी तकनीक को तो सीख ही साथ में अजंता, मुगल और पहाड़ी शैली की रेखाओं और उनके विषयों को भी अपने चित्रों में प्रयोग किया। उन्होंने जापानी स्याही की बजाय पारदर्शी जल रंगों का प्रयोग किया। इस विधा में सर्वप्रथम हल्के हाथ के द्वारा रेखांकन किया जाता है और इसके पश्चात उसमें जल रंग की एक पतली परत लगाई जाती है रंग के सूख जाने के पश्चात पानी में भिगोकर सपाट ब्रश की सहायता से बहते हुए पानी मैं या पानी से भरे पात्र मैं डुबोकर धोया जाता है। जिससे अतिरिक्त रंग निकल जाता है जिससे कठोर रेखाएं समाप्त हो जाती है। यह सभी रंग आपस मे एक दूसरे के साथ मिलकर धुंधला प्रभाव उत्पन्न करते है। इस प्रक्रिया के पश्चात पतले ब्रश के द्वारा रेखाओं को उभार कर चित्र को पूर्ण किया जाता है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि वॉश तकनीक में सफेद रंग का प्रयोग नहीं किया जाता और जहां सफेद प्रभाव दिखाना होता है वहां पर ब्रश की सहायता से रंग को उठा लिया जाता है जिससे चित्र में छाया प्रकाश का एक ताल-मेल उत्पन्न हो जाता है और चित्र में प्राण आ जाता है।

1896 में ई.वी. हेवल मद्रास आर्ट्स कॉलेज से स्थानांतरित होकर कोलकाता कला महाविद्यालय में प्रधानाचार्य बनकर आए। यूरोपियन होते हुए भी ई.वी. हेवल प्राचीन भारतीय कला से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने 1898 में अवनींद्रनाथ टैगोर को महाविद्यालय में सीधे उपाचार्य नियुक्त किया व महाविद्यालय में उनसे भारतीय कला पद्धति पर आधारित कक्षाएं प्रारंभ करवाई। अवनींद्रनाथ टैगोर के कला के प्रति क्रांतिकारी विचारों एवं ई.वी. हेवल के भारतीय कला के प्रति स्नेह के कारण ही बंगाल शैली का उदय हुआ। अवनींद्रनाथ टैगोर की वॉश शैली को उनके शिष्यों ने आत्मसार किया व संपूर्ण भारत वर्ष में प्रचारित भी किया। उनके प्रमुख शिष्यों में नंदलाल बोस, क्षितिंद्रनाथ मजूमदार, असित कुमार हलदर, के. वैकटप्पा, देवी प्रसाद राय चौधरी, शैलेंद्र नाथ दे, समरेंद्र नाथ गुप्त, सुधीर रंजन खास्तगीर आदि प्रमुख थे। नंदलाल बसु की सती, क्षितिंद्रनाथ मजूमदार की राधा-कृष्ण पर आधारित श्रृंखला, शैलेंद्र नाथ डे की मेघदूत श्रृंखला, आदि कलाकारों के चित्रों के विषय धार्मिक है इन कलाकारों ने चित्रांकन में बारीक रेखाओं के साथ-साथ कोमल पतली उंगलियों, पतली कमर, केशो को बारीक रेखाओं एवं लहरदार वस्त्रो को घुमावदार रेखाओं के द्वारा पूर्ण किया है। यह चित्र कलाकार की भावनाओं से प्रेरित एवं उनकी कल्पना शीलता पर आधारित है इन चित्रों में भारतीयता का भाव उत्पन्न होता है।

1.5. कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ में असित कुमार हलदर की विशिष्ट भूमिका

बंगाल से चलकर लखनऊ पहुंची इस वॉश कला के स्वरूप में काफी परिवर्तन हुआ। लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय में जिस वॉश कला पद्धति ने अपना स्वरूप लिया वह वॉश की पराकाष्ठा थी। कोलकाता कला महाविद्यालय के पश्चात वॉश चित्रण पद्धति के लिए लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय विशेष महत्वपूर्ण है, जहां अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्य असित कुमार हलदर ने वॉश चित्रण परंपरा का बीजारोपण किया। 1925 में उन्होंने कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ में प्रधानाचार्य पद को ग्रहण किया। वह महाविद्यालय के पहले भारतीय प्रधानाचार्य थे। इसके पूर्व नैथेलियल हर्ड बाथ स्कूल ऑफ आर्ट्स, इंग्लैंड से आकर 1911 से ही प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत थे उन्होंने अंग्रेजी पद्धति से कला शिक्षा का वातावरण महाविद्यालय में तैयार किया था। इसके पश्चात वहां पर वीरेश्वर सेन, सुखवीर सिंह सिंघल, हरिहर लाल मेढ़, फ्रैंक वेल्जी, बद्रीनाथ आर्य, राम जयसवाल, सनत कुमार चटर्ज, राजेंद्र प्रसाद आदि कई कलाकारों ने वॉश तकनीक को जीवित रखा। इन कलाकारों ने अपनी सशक्त रेखांकन के द्वारा चित्रों के विषयों के अनुकूल एवं जल रंगों की मधुर तान का प्रयोग करके सुंदर चित्रों का सृजन किया। असित कुमार हलदर से लेकर वर्तमान समय तक लखनऊ में जो चित्रांकन हुआ उसमें अब तक काफी अत्यधिक परिवर्तन आ चुका है जो की अवनींद्रनाथ टैगोर की तकनीक से तो मेल खाती है परंतु लखनऊ की अपनी अलग विशेषता को भी प्रदर्शित करती है क्योकि असित कुमार हलदर ने लखनऊ में वॉश चित्रण पर जोर दिया। वह हमेशा से ही चाहते थे कि लखनऊ की कला अपनी एक अलग पहचान बना सके। इसलिए लखनऊ की वॉश कला को बंगाल से अलग पहचान जा सकता है। उदाहरण के तौर पर बद्रीनाथ आर्य और उनके परम शिष्य राजेंद्र प्रसाद की कला को समझा जा सकता है। जिन्होंने धार्मिक एवं पौराणिक विषयों के अलावा आधुनिकता को ध्यान में रखते हुए समकालीन परिदृश्य में अपने चित्रों में परिवर्तन किया और समसामयिक चित्र बनाएं। जैसे बद्रीनाथ आर्य के रहस्यमय चित्र एवं राजेंद्र प्रसाद जी के पट्टी लपेटी हुई आकृतियां प्रमुख है।

बद्रीनाथ आर्य 'सॉवारी' (स्रोत- इलाहाबाद संग्रहालय)

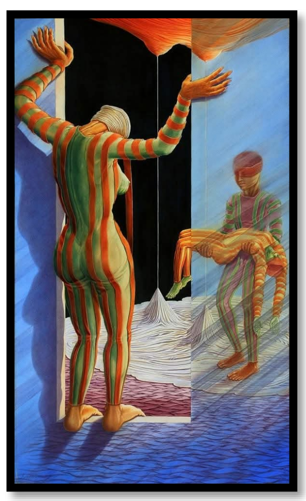

राजेंद्र प्रसाद 'बुरे विस्तार का सामना' (स्रोत - राजेंद्र प्रसाद सर)

1.6. वॉश चित्रों के संरक्षण में कला संग्रहालयों व अकादमीयों का योगदान

कला संग्रहालय एवं अकादमियां वॉश चित्रों के संग्रह के साथ-साथ इन चित्रों के प्रदर्शन एवं कला प्रेमियों में वॉश चित्रों के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य भी करती है जिससे इन चित्रों की कोमल जल रंग तकनीक एवं इन चित्रों के ऐतिहासिक महत्व को समझा जा सके। अकादमी इस चित्रण तकनीक को जीवित रखने एवं इस कला के महत्व को कला प्रेमियों को संप्रेषित करने का विशेष कार्य करती है। प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं के आयोजन से नई पीढ़ी में इस कला के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने एवं विलुप्त होती कला को बचाने में इन अकादमियों की अहम भूमिका है। राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ एवं राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, दिल्ली ने विभिन्न कैटलॉग्स, मोनोग्राम एवं पत्र पत्रिकाओं का संपादन किया हैं, जिसमें वॉश शैली के चित्रकारों एवं उनके चित्रों को विशेष महत्व के साथ छापा गया है। वॉश चित्रण करने वाले महत्वपूर्ण कलाकारों के चित्रों को विभिन्न कला संग्रहालयों में संरक्षित देखा जा सकता है। जिनमे सबसे महत्वपूर्ण अवनींद्रनाथ टैगोर का 1905 में निर्मित चित्र “भारत माता” है जो विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता में संरक्षित है। अवनींद्रनाथ टैगोर, क्षितिंद्रनाथ मजूमदार, अब्दुल रहमान चुगताई, नंदलाल बोस, उपेंद्र महारथी आदि कलाकारों की कृतियों को नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली में संरक्षित किया गया है। बद्रीनाथ आर्य, महादेवी वर्मा, जगदीश गुप्त आदि कलाकारों के वॉश चित्रों को इलाहाबाद म्यूजियम में संरक्षित किया गया है। हरिहर लाल मेढ़ के 12 वॉश चित्रों को राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ ने अपने पास संग्रहित किया है। समरेंद्र नाथ गुप्त, असित कुमार हलदर, नंदलाल बोस जैसे कलाकारों को भारतीय संग्रहालय कोलकाता ने अपने चित्र संग्रह में स्थान दिया है। वॉश चित्रों को भारत के विभिन्न सरकारी संग्रहालयों एवं अकादमियों के संरक्षण में देखा जा सकता है इन सब के अतिरिक्त निजी संग्रहालयों की भी भूमिका महत्वपूर्ण है जिन्होंने वॉश चित्रों को अपने संग्रह में स्थान दिया है।

2. समीक्षात्मक विश्लेषण

वॉश पद्धति की भूमिका के सकारात्मक पक्ष की बात करें तो वॉश पद्धति ने भारतीय कलाकारों को पाश्चात्य प्रभाव से मुक्त कराकर विदेशी तैल चित्रों की नकल करने की अपेक्षा अपनी मूल पारंपरिक जड़ों की तरफ लौटने के लिए प्रेरित किया। जिसमें मानवीय भावनाओं, करुणा, विरह, शांति को व्यक्त करने के लिए वॉश पद्धति को एक उचित माध्यम के रूप में प्रयोग किया, सदियों से चली आ रही भारतीय लघु चित्रों की विशेषताओं एवं अजंता की सशक्त रेखांकन का प्रयोग करते हुए लयबद्ध रेखाओं को आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया। प्रारंभ में पाश्चात्य कला के आगे इस कला का काफी विरोध हुआ। क्योंकि कुछ छात्रों को लगा यूरोपीय संस्कृति के प्रभाव से भारतीय कला की उन्नति हो सकती है और वॉश कला उस तरक्की में रोड़ा अटका सकती है। किंतु इस कला आंदोलन में भाग लेने वाले कलाकार और कला आलोचक दृढ़ता से अपने मार्ग पर बढ़ते रहे और अंत में देश भर में अपना प्रभाव फैलाने में सफल हुए। अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्यों ने संपूर्ण भारतवर्ष में इस कला का प्रचार किया और इस कला के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं स्वदेशी की भावना को पूरे देश में फैलाया। अवनींद्रनाथ टैगोर का सहयोग एक कलाकार के रूप में तो है ही साथ में एक शिक्षक के रूप में उनकी अहम भूमिका है उनके शिष्य शांतिनिकेतन, लखनऊ, जयपुर, मद्रास, लाहौर आदि के कला महाविद्यालयों में प्रधानाचार्य के पद पर रहे। जिन्होंने इस कला को राष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाने में प्रमुख योगदान दिया।

यदि हम वॉश पद्धति की भूमिका के आलोचनात्मक पक्ष की बात करें तो प्राचीन कला से प्रेरणा का दावा करती हुई यह कला प्राचीन परंपरा की अनुकृति मात्र रह गई। यहां तक की संयोजन, रंग योजना और चित्रण विद्या में भी किसी पुरानी परंपरा को नहीं अपनाया गया। इस शैली द्वारा जो भी बनाया गया वह मात्र अनुकृति थी। पतली उंगलियां, पतली बाहें, अधखुले नेत्र और धुंधले रंग यह सब इन चित्रों की विशेषताएं हैं। आलोचकों ने यहां तक कहां है कि इन चित्रकारों में कोरी भावुकता, दुर्बल रेखांकन, आधुनिक जीवन से पलायन, धूमिल रंग योजना समावेश है। हालांकि यह सारी बातें आंशिक रूप से तो सही हो सकती है लेकिन सभी कलाकारों पर यह बात लागू नहीं होती। क्योंकि बंगाल से शिक्षा प्राप्त कलाकारों में अवनींद्रनाथ टैगोर, गगनेंद्रनाथ, नंदलाल बसु, क्षितिंद्रनाथ मजूमदार, समरेंद्र नाथ गुप्त, देवी प्रसाद राय चौधरी, अब्दुल रहमान चुगताई व लखनऊ के कलाकारों में सुखवीर सिंह सिंघल, हरिहर लाल मेढ़, फ्रैंक वेल्जी, बद्रीनाथ आर्य, राम जयसवाल, राजेंद्र प्रसाद आदि बहुत से कलाकारों ने इस कला को आत्मसार किया और उच्च स्तरीय चित्रों की रचना की। जिनके चित्र आज भी देश के विभिन्न संग्रहालय में संग्रहित है। इस शैली में जो कमियां थी उनके मर्म को अवनींद्रनाथ टैगोर ने अपने शब्दों में कहा है “हम भारतवासी वस्तुओं को केवल अपने ही भावों से चित्रित करते हैं हम प्रसन्न नहीं है, क्योंकि भारत में मुस्कान नहीं। हमारी आत्माओं में अंधकार है, क्योंकि हम स्वतंत्र नहीं“। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस शैली की कमजोरी का वास्तविक कारण यही था कि भारत में पढ़े लिखे समृद्ध लोग अंग्रेजी कला और संस्कृति से अधिक प्रभावित थे और उनकी दृष्टि में भारतीय संस्कृती की वर्तमान काल में, उन्हें प्रेरित करने के लिए कुछ विशेष नहीं बचा था। ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी विषमताओं का सामना करते हुए अवनींद्रनाथ टैगोर ने राष्ट्रीय विचारधारा को आगे बढ़ाया जो की एक सराहनीय कार्य था।

3. निष्कर्ष

वॉश चित्रण पद्धति भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक स्वर्णिम युग की सूत्रधार है इस कला ने भारतीय कला को औपनिवेशिक प्रभाव से मुक्त करा कर, उसे एक दार्शनिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया। जिससे भारतीय कलाकारों को आत्म बल मिला और वे स्वदेशी की भावना से निहित होकर भारतीय कला को एक नई पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। वॉश चित्रण पद्धति केवल वस्तु का चित्रण नहीं बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति है। इस माध्यम द्वारा बनाए गए चित्र धार्मिक, पौराणिक, नायक-नायिका से प्रेरित एवं समकालीन विषयों पर आधारित है। धूमिल रंग एवं रंगों के मिश्रण से एक रहस्यमय वातावरण का प्रभाव उत्पन्न होता है जो दर्शक के मन के सकारात्मक भाव को उत्पन्न करता है। प्रारंभ में चित्रकारों को चित्रण सामग्री भी सही से उपलब्ध नहीं होती थी बड़े चित्र बनाना भी संभव नहीं था, परंतु अब पहले की अपेक्षा चित्रण सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है जिससे इंपीरियल साइज के बड़े चित्रों का निर्माण प्रारंभ हुआ और समकालीन विषयों पर आधारित चित्र बनने प्रारंभ हुए। बद्रीनाथ आर्य और राजेंद्र प्रसाद जैसे कलाकारों ने बृहद और भव्य चित्रों का निर्माण किया। वॉश चित्रण- चित्रण की एक कठिन तकनीक है इसके तदुपरान्त भी इन बड़े चित्रों का निर्माण करना कलाकार के धैर्य और लगन की भावना को प्रदर्शित करता है इन कलाकारों द्वारा रचे गए चित्र प्रायोगिक दृष्टिकोण से अति सराहनीय है, जो समकालीन कला में अपना स्थान बना पाए और वॉश को क्षेत्रीय स्तर से निकाल कर समकालीन कला की मुख्य धारा से जोड़ते हुए वैश्विक पटल पर लाये। आज यह कला विश्व स्तर पर अपनी पहचान रखती है लेकिन इन सब के तदुपरान्त भी इस कला को करने वाले कलाकारों की संख्या घटती जा रही है। इन चित्रों के निर्माण में समय और धैर्य की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है और एक चित्र के निर्माण में कई दिन या सप्ताह भी लग जाते हैं। कलाकार अक्सर ऐसी कठिन विधाओं से बचने की कोशिश करते हैं कलाकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर ऐसी विधा चाहते हैं जिससे उनके चित्रों का निर्माण जल्द हो सके। जबकी वॉश विधा में जल रंग माध्यम होने के कारण गलती की संभावना हमेशा बनी रहती है और चित्र के खराब होने का भय भी रहता है। आधुनिक कला बाजार में एक्रेलिक और डिजिटल आर्ट की भारी मांग के बीच वॉश पेंटिंग की भव्यता और धुंधलेपन को स्थापित कर पाना थोड़ा कठिन है। जबकि वर्तमान में कला प्रेमी गहरे एवं चमकदार रंग अधिक पसंद करते हैं, धैर्य की कमी और वॉश चित्रों की उपेक्षा के कारण नए कलाकार इस कला में अपना भविष्य बनाने में कतराते हैं। शिक्षण संस्थानों में इस कला को सिखाने वाले गुरुओं की संख्या लगभग शून्य है जिसके कारण इसकी बारीकियो को अकादमिक स्तर पर सिखाया नहीं जा रहा। जिसके कारण ऐसी पारंपरिक विधाओं का प्रसार कठिन है। लेकिन इस परिस्थितियों से बचा जा सकता है। यदि कला दीर्घाएं इन कलाओं को प्रदर्शित करें और शिक्षण संस्थान इन शैलियों पर पर विशेष ध्यान दें और उन्हें प्रोत्साहित करें तो इसकी विलक्षण सुंदरता को फिर से जीवित किया जा सकता है।

REFERENCES

Agrawal, Dr. Giriraj Kishore, Modern Indian Painting (Fifth Edition 2006), Sanjay Publications, Agra

Agrawal, Dr. Shyam Bihari - Kalaguru Felicitation Book (Second Edition 2023), First Print Publications, Prayagraj

Kumar, Amit (April-June 2022) Uttar Pradesh: Environment and Development of Art, Kal Quarterly Year 47(41), 35-4.

Ganguly, O. C., Kshitindranath Majumdar (First Edition 1995), Roop Shilp Publications, Allahabad

Chaturvedi, Dr. Mamta, Contemporary Indian Art (Second Edition 2010), Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur

Dwivedi, Dr. Ram Shankar, Ranger Kavi Asit Kumar Haldar (First Edition 2021), Rajkamal Publications Pvt. Ltd., New Delhi

Mishra, Awadhesh. (April 2010) Meghdoot in Wash: Harihar Lal Medh, Art Gallery, 10(20), 34-40.

Verma, Laxmikant. Painters of Allahabad (1st ed. 2000), Allahabad Museum, Allahabad

Saha, Dr. Ranjit (February 2018) Poets of Image: The Image of the Poet, Contemporary Art 50, 62-69